Samyak
An Institute For Civil Services

RAS - 23 MAINS TEST SERIES

सिद्धि-II - 013

Time : 3 Hours

Maximum Marks : 200

हिन्दी - भाग अ, भाग ब, भाग स

Hindi - Part (A, B, C)

Paper - IV

Name :	
Enroll. No.:	
Date of Birth :	
Medium :	english
E-mail :	
Exam Date :	5/5/24
Invigilator's Signature :	
ECN:	RCN:

MARKS		
Part	Attempted Questions	Marks Obtained
Part - A	30	42.5
Part - B	8	40.0
Part - C	01	12.0
Total	39	94.5

अनुदेश (Instructions)

1. परीक्षा शुरू होने से पहले पुस्तिका को जाँच लें।
   Please check the booklet before commencement of the exam.
2. अंक योजना प्रत्येक खंड के प्रारम्भ में दी गई है।
   The marking scheme is given at the start of every section.
3. अभ्यर्थियों को उत्तर निर्धारित शब्द सीमा से अधिक नहीं लिखना चाहिए, इसका उल्लंघन करने पर अंक काटे जा सकते हैं।
   Candidates should not write more than the prescribed word limit in answers, violating this may result in deduction of marks.
4. अभ्यर्थियों को निर्देशित किया जाता है कि किसी भी प्रश्न का उत्तर प्रश्नोत्तर पुस्तिका में निर्धारित स्थान पर ही लिखें। बॉर्डर लाईन से बाहर प्रत्युत्तर नहीं लिखें। बॉर्डर लाईन के बाहर लिखे गये उत्तर को जाँचा नहीं जायेगा।
   Candidates are directed to write answers only in the prescribed space of booklet. They should not write answer outside the border line. Answer written outside the border line will not be checked.

	REVIEW PARAMETERS	SCALE			
		Good	Above Average	Average	Below Average
1.	DOES THE ANSWER ADDRESS THE DEMAND OF THE QUESTION?				
a.	Answer Relevancy				
b.	Answer Enrichment points like use of: · Key Terms/ Subject Vocabulary. Use of Commission/ report/ government publication/ judgements, etc. Association with the Current Affairs and use of examples to explain the concept and idea				
2.	HOW WELL IS THE ANSWER PRESENTED?				
a.	Structure - Intro, Body, Conclusion				
b.	Presentation – Using Subheadings/ points/ highlighting/ flowcharts/ diagrams/ maps				
c.	Language & Grammar				
d.	Word limit				

Detailed Comments / Feedback / Suggestions for Improvement
विस्तृत टिप्पणियाँ/फीडबैक/सुधार के लिए सुझाव

1. अशुद्धियों से बचे।
2. भाग - अ पर विशेष ध्यान दे।
3. पत्र लेखन में और सुधार की आवश्यकता है।
4. पारिभाषिक शब्दों का निरंतर अभ्यास करते रहे।
5. अच्छा प्रयास है।
6. निरंतरता बनाए रखे। Revision करते रहें।

Best of Luck

भाग-अ

1. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए:- 4×½ = 2

(i) प्राप्ति + इच्छा = प्राप्तीच्छा

(ii) राजन् + ऋषि = राजर्षि

(iii) विधै + अक = विधायक

(iv) विद्वत् + वर्ग = विद्वद्वर्ग

2. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए:- 4×½ = 2

(i) संश्लेषण = सम् + श्लेषण

(ii) अकिञ्चन = अकिम् + चन

(iii) विराडायोजन = विराट् + आयोजन

(iv) धूमाच्छादित = धूम + आच्छादित

3. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए:- 4×½ = 2

(i) मूल + छिन्न = मूलच्छिन्न

(ii) सत् + उद्योग = सदुद्योग

(iii) परि + अवेक्षक = पर्यवेक्षक

(iv) ज्योतिः + आदित्य = ज्योतिरादित्य

4. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए:- 4×½ = 2

(i) अहर्निश = अहन् + निशा

(ii) स्वेच्छाचार = स्वेच्छा + आचार

(iii) सौभाग्याकांक्षिणी = सौभाग्य + आकांक्षिणी

(iv) वपुष्मान = वपुः + मान

5. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए:

(i) विद्युद्ध्वज = विद्युत + ध्वज

(ii) प्रौद्योगिकी = प्र + औद्योगिकी

(iii) हुतासन = हुत + आसन अशन

(iv) प्रातरस्मरण = प्रातः + स्मरण

1 1/2

6. निम्नांकित उपसर्गों के संयोग से दो-दो शब्द बनाइये:- 4×½ = 2

(i) पुनर् = पुनर्जीवन, पुनर्विचार, पुनर्जन्म

(ii) अधः = अधोगति, अधोलिखित, अधः शय, अधः अय

(iii) वि = विमान, विधान, विन्यास

(iv) प्रति = प्रतिरूप, प्रतिदिन

1 1/4

7. निम्नांकित शब्दों में से उपसर्ग पृथक् कीजिए- 4×½ = 2

(i) आनुषंगिक = अनु अनु

(ii) नैराश्य = निर्

(iii) वैधव्य = वि

(iv) अभ्युत्थान = अभि

1 1/2

8. निम्नांकित उपसर्गों के संयोग से दो-दो शब्द बनाइये:- 4×½ = 2

(i) दु = दुकान, दुनाली, दुधार

(ii) उ = उत्तर, उड़द, उछलना, उठाना

(iii) स्व = स्वरूप, स्वजन, स्वभाव

(iv) अमा = अमानत, अमाशय, अमावस्या, अमात्य

3/4

9. निम्नांकित शब्दों में से उपसर्ग पृथक् कीजिए- 4×½ = 2

(i) उन्नासी = उद् उन

(ii) प्राक्कथन = प्राग प्राक्

(iii) लाचार = ला

(iv) सहित = स

1

10. निम्नलिखित प्रत्ययों के संयोग से दो-दो शब्द बनाइये:- 4×½ = 2

(i) इत = खंडित, खंडित, जड़ित, विचलित

(ii) आड़ी = खिलाड़ी, अनाड़ी

(iii) इष्णु = सहिष्णु, विष्णु, चलिष्णु

(iv) हरा = सुनहरा, रुपहरा, इकहरा

1 3/4

11. निम्नांकित शब्दों में से प्रत्यय पृथक् कीजिए- 4×½ = 2

(i) हरीतिमा = हरित + इमा

(ii) औद्योगिकी = ई

(iii) मनसिज = ईज ज

(iv) कब्रिस्तान = स्थान इस्तान

1

12. निम्नलिखित प्रत्ययों के संयोग से दो-दो शब्द बनाइये:- 4×½ = 2

(i) इश = पैदाइश, ख्वाहिश, आजमाइश, पैमाइश

(ii) ईन = जमीन, कमीन, अमीन, शालीन, नमकीन

(iii) कर = पढ़कर, खेलकर, जमकर, हितकर, भयंकर

(iv) ड़ा = पकड़ा, झगड़ा, चमड़ा, दुखड़ा

3/4

13. निम्नांकित शब्दों में से प्रत्यय पृथक् कीजिए- 4×½ = 2

(i) तेलंगाना = तेल + अंग + आ + ना ✗ आना

(ii) आरण्यक = अक ✓

(iii) लड़का = का आ

(iv) ध्यातव्य = तव्य

½

14. निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए- 4×½ = 2

(i) तिरोभाव = आविर्भाव

(ii) अंबर = धरती, पृथ्वी (अवनि) ✓

(iii) अर्वाचीन = प्राचीन

(iv) सदय = क्रूर ✓

1

15. निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए- 4×½ = 2

(i) आह्लाद = विषाद ✓

(ii) अलम् = ईषत् / कम

(iii) पराभव = विभव

(iv) मसृण = रूक्ष

16. निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए- 4×½ = 2

(i) सुघड़ = फूहड़ ✓

(ii) विश्लिष्ट = संश्लिष्ट ✓

(iii) क्षणिक = शाश्वत ✓

(iv) आवाहन = विसर्जन

1½

17. निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए- $4 \times ½ = 2$

(i) शठ = सज्जन (सज्जन)

(ii) ह्रास = वृद्धि

(iii) ज्योत्स्ना = तिमिस्त्रा तमिस्त्रा

(iv) स्थापन = उन्मीलन उन्मूलन

1

18. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पयार्यवाची लिखिए:- $4 \times 1 = 4$

(i) अश्रु = आँसू, अंब नयनजल

(ii) खान = खदान, खजाना आगार, भण्डार

(iii) क्षणभंगुर = नश्वर, क्षणिक, अचिर

(iv) बेशुमार = प्रचुर, बहुतायत असीम, अनंत

1

19. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पयार्यवाची लिखिए:- $4 \times 1 = 4$

(i) क्षीर = दुध, गोरस

(ii) कूज = आवाज, ध्वनि

(iii) महीधर = बंदर, वानर पहाड़, शैल

(iv) अरुणोदय = प्रातः, प्रभात

0

20. निम्नांकित शब्द-युग्मों का अर्थ भेद लिखिए:- $4 \times 1 = 4$

(i) खरा-खर्रा =

(ii) स्वजन-श्वजन =

(iii) शांति-श्रांति = शांत - क्लेश स्थिरता - थकावट

(iv) हरिण-हरिण्य =

0

21. **निम्नलिखित शब्द-युग्मों का अर्थ भेद लिखिएः-** 4×1 = 4

0

(i) सागर-साग़र =

(ii) षष्टि-षष्ठी = षष्ठी - साठ 60 वर्ष - छठी

(iii) पावस-पायस =

(iv) प्रत्युपकार-प्रत्यपकार = कल्याण - अकल्याण
उपकार के बदले उपकार - अपकार के बदले अपकार

22. **निम्नांकित वाक्यांशों के लिए सार्थक शब्द लिखिएः-** 4×1 = 4

(i) किन्हीं घटनाओं का कालक्रम से किया गया यथातथ्य वर्णन =

इतिवृत्त ✓

(ii) शीघ्रता का अभाव =

शिथिलता अत्वरा

(iii) घर के सबसे ऊपर के खण्ड की कोठरी =

अटारी ✓

3

(iv) मोक्ष की इच्छा रखने वाला =

मुमुक्षु ✓

23. **निम्नांकित वाक्यांशों के लिए सार्थक शब्द लिखिएः-** 4×1 = 4

(i) सुख और दुःख में समान रहने वाला =

उदासीन मनस्वी

(ii) किसी कार्य में लीन/लगा हुआ =

तल्लीन व्यापृत

1

(iii) जो खाना सदैव मुफ्त में दिया जाता है =

सदावर्त ✓

(iv) जिस शब्द के एक से अधिक अर्थ हो =

श्लेष

24. निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए- 8×1 = 8

(i) किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखो।

किन्हीं दो पर टिप्पणी करो। टिप्पणियां लिखो।

(ii) मौर्यकालीन समय में लोग सुखी थे।

मौर्यकालीन लोग सुखी थे। मौर्यकाल में लोग सुखी थे।

(iii) आपने बड़ी ऊंची कोटि की कहानी सुनाई।

आपने ऊँची उच्च कोटि की कहानी सुनाई।

(iv) उसने हमारे नाक में दम कर दिया।

उसने हमारी नाक में दम कर दिया।

(v) उसने मेरे को खाना खिलाया।

उसने मुझे खाना खिलाया।

5

(vi) वह सारी रातभर जागता रहा।

वह रातभर जागता रहा

(vii) उज्जवल चरित्र के लिए मानसिक दृढ़ता आवश्यक है।

उज्ज्वल चरित्र के लिए मानसिक दृढ़ता आवश्यक है।

(viii) तेरी वात सुनते-सुनते कान पक गये।

तेरी बातों से कान पक गये। तुम्हारी बात सुनते-सुनते कान पक गए।

25. निम्नांकित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए:- 4×1 = 4

(i) आल्हाद = ~~अल्हाद~~ आह्लाद

(ii) मिष्टान = ~~मिष्ठान्न~~ मिष्ठान्न मिष्टान्न

(iii) केलाश = कैलाश कैलास

(iv) प्रमाणिक = प्रामाणिक प्रामाणिक

1

26. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए:- 4×1 = 4

(i) प्रत्युत् = ~~प्रद्युत~~ प्रद्युम्न प्रत्युत

(ii) चन्द्रमोली = चँद्रमौली चन्द्रमौलि

(iii) किंववंदति = ~~किंवदिति~~ किंवदंती किंवदंती

(iv) प्रत्यवर्तन = प्रत्यावर्तन

1

27. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताते हुए वाक्यों में सार्थक प्रयोग कीजिए:- 4×2 = 8

(i) तीन तेरह करना - उचित न्याय करना छिन्न-भिन्न करना।

राम उसूलों का पक्का है वह अब बन गया अब तीन तेरह करेगा।

अत्यधिक शैतानी करना।

(ii) शैतान के कान कतरना → बहादुरी का कार्य करना। चालाक होना

राम को भोला मत समझना वह शैतान के कान भी कतर सकता है।

1/2

(iii) जहाज का काग होना - एकमात्र सहारा होना। एकमात्र ठीकाना होना।

मेरे सहकर्मियों को नौकरी छोड़ने है तो छोड़ने दो, मैं कहीं नहीं जाने नहीं छोड़ने वाला मैं तो इसी जहाज का काग रहूँगा। → (उचित समय बीत जाने पर इच्छा जगना)

2

(iv) बासी कढ़ी में उबाल आना → असामर्थ्य व्यक्ति में शक्ति/बल प्राप्त होना।

राम को देखकर पड़ोसी श्याम ने मजदूरी का काम शुरू किया इस पर गाँव वालों ने कहा 60 की उम्र मे काम करेगा लगता है बासी कढ़ी मे उबाल आ रहा है।

1½

28. निम्नलिखित लोकोक्तियों का अर्थ बताते हुए वाक्यों में सार्थक प्रयोग कीजिए:- 4×2 = 8

(कमाया तो खाया नहीं तो भूखे)

(i) आई तो रोज़ी नहीं तो रोजा- स्थिति को जैसी की जैसी स्वीकार करना।

परीक्षा मे पास होने न होने की कोई चिंता नही है अपने लिए तो आई तो रोजी नही तो रोजा।

0

→ (कोई काम अपने हाथ से करने पर ही ठीक होता है)

(ii) खेती, खसम लेती है- लाभकारी/प्रिय वस्तु कीमत लेती है।

0

आईएएस बनना आसान बात नही है, कड़ी मेहनत करनी पड़ती है सहज प्राप्त नही होती क्योंकि खेती, खसम लेती है।

(iii) डायन को दामाद प्यारा- अपने सगी को प्यारे होते है।

राम सभी लड़कों से लड़ता रहता है परन्तु अपने पुत्र से कुछ नही कहता, सही है डायन को दामाद प्यारा।

2

(iv) लेना एक न देना दो- किसी से कोई मतलब नही रखना।

तलाक के बाद सीता अपने ससुराल वालों से कोई बातचीत नही करती उसके लिए तो उनसे न लेना एक न देना दो।

2

29. निम्नांकित पारिभाषिक शब्दों के समानार्थक हिन्दी पारिभाषिक लिखिए- 5×1 = 5

(i) ABATE – ~~[illegible]~~ निरस्त करना, समाप्त करना

(ii) NOURISH – पोषण

(iii) QUALIFIED SUPPORT – ~~योग्य समय~~ ~~सशर्त~~ ~~समर्थन~~ सशर्त समर्थित

(iv) REPUGNANT – मुरझाया हुआ ~~फटकार~~ विरुद्ध

(v) CERTIFY – प्रमाणित

4

30. निम्नांकित पारिभाषिक शब्दों के समानार्थक हिन्दी पारिभाषिक लिखिए- 5×1 = 5

(i) OFFICIATING –

कार्यपालिक स्थानापन्न

(ii) STIPEND –

वैतनदाता वजीफा / छात्रवृत्ति

(iii) UNTENABLE –

असमर्थनीय

(iv) CASUAL DRESS –

साधारण वस्त्र अनौपचारिक वस्त्र

(v) DEARNESS RELIEF –

महँगाई राहत

1

॥आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः॥

भाग-ब

1. **निम्नलिखित अवतरण का उचित शीर्षक देते हुए एक-तिहाई शब्दों में संक्षिप्तीकरण कीजिए।** **अंक-10**

ध्यान कर्म का निषेध नहीं है, अपितु पूर्ण और शुद्ध कर्म का आधार है। ध्यान को ठीक से न समझने वाले लोग ही ध्यान को कर्म का निषेध समझ बैठते हैं। ध्यान और कर्म वैसे ही हैं, जैसे रस्सी का कुएँ के भीतर जाना और बाहर आना या हृदय का सिकुड़ना और फैलना। ध्यान स्वयं को जानने का साधन है और कर्म स्वयं को बाँटने का। स्वयं को जानना आत्म-ज्ञान है और स्वयं को बाँटना प्रेम है। आत्म-ज्ञान से बुद्धि को ठीक निर्णय देने के लिए सत्य का आधार उपलब्ध होता है तो प्रेम से हृदय का विकास सम्भव हो पाता है, व्यक्तित्व की अखंडता और एकता के लिए बुद्धि और हृदय दोनों का समुचित विकास आवश्यक है। ध्यान का लक्ष्य विरोधात्मक वृत्तियों का समन्वय करके अंतर को प्रकाशित करना है और कर्म उस अन्तः ज्योति से बहने वाली करुणा और आनंद है।

ध्यान और कर्म

Good

ध्यान और कर्म परस्पर संबंधित है। ध्यान आत्म ज्ञान और कर्म आत्मवितरण का आधार है। व्यक्ति के बौद्धिक व मानसिक विकास में ध्यान विरोधात्मक परिस्थितियों का समन्वय कर कर्म रूप धारा प्रवाहित करता है। ध्यान प्रकाश तो कर्म ज्योति है।

शब्द - लगभग 35

6

→ अनावश्यक शब्दों के प्रयोग से बचें।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

2. निम्नलिखित अवतरण का उचित शीर्षक देते हुए एक-तिहाई शब्दों में संक्षिप्तीकरण कीजिए। अंक-10

"आज देश स्वतंत्र है। हमें अपनी शक्ति की वृद्धि करनी है, जिससे हमारी नवीन स्वतंत्रता की रक्षा हो सके। आए दिन ऐसे संकट हमको चुनौती देते रहते हैं जिनसे निपटने के लिए एक शक्तिशाली सेना की आवश्यकता है। यदि विद्यालयों में ही देश-सेवा की यह भावना दृढ़ हो जाए तो भविष्य के लिए बहुत बड़ी तैयारी हो सकेगी। प्राचीनकाल में आश्रमों वेद-शास्त्रों के साथ-साथ अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा भी दी जाती थी। द्रोणाचार्य ने कौरवों-पाण्डवों को सैनिक शिक्षा दी थी। सैनिक शिक्षा से शारीरिक शक्ति के साथ मानवीय गुणों का भी विकास होता है। सेवा, तत्परता, परिश्रमशीलता, निर्भयता आदि गुण इस शिक्षा से अपने आप आ जाते हैं। जीवन भी तो एक युद्धक्षेत्र ही है। इस क्षेत्र में लड़ने के लिए भी उपर्युक्त गुणों की आवश्यकता पड़ती है। हमारे देश की संस्कृति शांति प्रधान है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपनी शक्ति में वृद्धि न करें। आज सम्पूर्ण संसार सैनिक शिक्षा पर जो ध्यान दे रहा है उसे देखते हुए हमारे लिए भी इस ओर कदम बढ़ाना आवश्यक हो जाता है।"

(अनिवार्य सैनिक शिक्षा)

4 1/2

| शीर्षक : सैनिक शिक्षा का बढ़ता महत्व |

नवीन

देश को नविन संकटों से निपटने के लिए शक्तिवर्धन करनी है। प्राचीनकाल की आश्रम व्यवस्था के आधार पर सैनिक शिक्षा देने से देश-सेवा व मानवीय गुणों का विकास होगा। शांति प्रधान भारत को सैनिक मजबूत करने के लिए सैनिक शिक्षा अति आवश्यक है।

| शब्द — 45 लगभग |

→ मात्रा संबधी अशुद्धियां करने से बचें।
→ शीर्षक का चुनाव सही करें।
→ शब्द सीमा का ध्यान रखें।

अवतरण को पढ़कर इसका भाव समझे फिर शीर्षक लिखे

शीर्षक- स्वर्ग की गुलामी से नरक का स्वराज श्रेयस्कर माना गया है।

उक्त पंक्ति का आशय है की गुलामी किसी भी प्रकार की हो, उसमे सब सुख सुविधा ही क्यो न हो वह निरर्थक है तथा स्वतंत्रता मे झेले गए कष्ट, पीड़ा, मुसीबते गुलामी के आराम से कई बेहतर है। लेखक का आशय है की किसी का गुलाम होकर राजा बननेहै ~~भी अत~~ से उत्तम स्वाधीनता की चाकरी करना होगा।

Good

6

इसी संदर्भ में कहा गया है कीपराधीन सपनेहु सुख नाहि" अर्थात पराधीनता में सपने मे सुख नही आ सकता क्योंकि सुख प्राप्ति के लिए व्यक्ति को सभी दासता ओं से मुक्त होना पड़ता है, वह अपने नींद में भी स्वतंत्र स्वप्न नही देख सकता है अर्थात उसके सपने पर भी उसके स्वामी का प्रभाव, अधिकार रहेगा।

महात्मा गांधी ने कहा था की हिंसा बुरी ~~चीज~~ चीज है परन्तु यदि

पराधीनता तथा हिंसा में से चुनना पड़े तो वैद्धिक हिंसा का चुनाव करो क्योंकि गुलामी सबसे बड़ा अभिशाप है। मानव स्वतंत्र विचार रखने का जन्मजात अधिकार रखता है तथा अपने मन व विचार की स्वतंत्रता किसी के समक्ष समर्पित नहीं करनी चाहिए।

राजस्थान में अंग्रेज राजदरबार में शामिल होने जा रहे अलवर के राजा को कवि केसरी बारहठ ने चेतावनी रा चुगटियां भेंट की जिसे पढ़कर राजा में स्वतंत्रता व स्वाधीनता की भावना जाग्रत हुई तथा उसने अंग्रेजी गुलामी स्वीकार करने से बेहतर युद्ध में संघर्ष करना चुना। क्योंकि स्वर्ग की गुलामी से नरक का स्वराज श्रेयस्कर है।

→ उचित Quotation को सम्मिलित करें।

→ उचित उदाहरणों का प्रयोग करें।

4. निम्नलिखित का भाव विस्तार कीजिए- अंक-10

शीर्षक- ज्ञान-विज्ञान से मनुष्य की अभिवृद्धि हो सकती है, विकास नहीं हो सकता।

मानव सम्पूर्ण जीवन अपने मानसिक व ~~आत्मिक~~ शारीरिक अभिवृद्धि के लिए प्रयास करता है इसके लिए वह ज्ञान - विज्ञान दोनों का उपयोग करता है किंतु इससे मानव का विकास नहीं होता क्योंकि जहाँ अभिवृद्धि व्यक्तिगत है विकास सामाजिक, व्यापक व बहुआयामी है।

4½

ज्ञान प्राप्त करने से व्यक्ति सम्पूर्ण नहीं हो सकता विज्ञान का ज्ञान लेना मानव की सभी आकांक्षाओं, तृष्णाओं को शांत नहीं कर सकता। इससे मनुष्य की केवल वैचारिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक बढ़ोतरी होती है क्योंकि मानव के आर्थिक विकास, सामाजिक उत्थान, पर्यावरणीय विकास, आध्यात्मिक व भौतिक विकास ~~में~~ जो उसके जीवन व उनको प्रभावित करने वाले सभी पहलू की अभिवृद्धि आवश्यक है।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक ए. एच. मास्लो ने आवश्यकता की सीढ़ीनुमा संरचना बनाई

है जिसकी पूर्ति से मानव अपनी क्षमता का उचित उपयोग व सर्वांगीण विकास कर सकता है। इसी इस सोपानुमा संरचना में शारीरिक व मानसिक आवश्यकता को प्रथम स्थान दिया तथा ज्ञान-विज्ञान को चौथा स्थान मिलता है क्योंकि ज्ञान से सम्पूर्णता नहीं आती तथा मानव विकास का बहुआयामी होना इसे और जटिल बनाता है।

→ शीर्षक को समझकर उसके अनुरूप लिखने का प्रयास करें।

→ उचित Quotation का प्रयोग करें।

→ उचित उदाहरणों के माध्यम से समझाने का प्रयास करें।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

5. निम्नांकित अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए। अंक-10

Although art and morality have been integral parts of society, there has always been a difference of opinion on some issues or topics. Art has often adopted and reflected offbeat behavior and attitudes. In many cases this practice of art has proved to be revolutionary. On the contrary, morality has been more tradition-based. Morality has set standards of good behavior based on social likes and dislikes in almost all areas. As a result, we have to face ethical norms at many levels, such as political ethics, business ethics, cultural ethics etc. But most emphasis is given on sexual morality. Not only this, everyone in the society is expected to know, understand and follow these codes of ethics and acceptance and taboos very well.

हालांकि कला और नैतिकता समाज के अभिन्न अंग रहे हैं, हमेशा किसी मुद्दे या विषय पर मतभेद रहा है। कला ने कई बार असंगत व्यवहार और आचरण को स्वीकार व प्रदर्शित किया है। कई मामलों में कला की यह आदत क्रांतिकारी साबित हुई। इसके विपरीत, नैतिकता ज्यादातर परंपरा आधारित रही। नैतिकता ने सभी क्षेत्रों में अच्छे व्यवहार के स्तर को पसंद-नापसंद के आधार पर निर्धारित किया है। परिणामतः हमें कई स्तरों पर नैतिक मान्यता का सामना करना पड़ता है, जैसे राजनैतिक नैतिकता, व्यावसायिक नैतिकता, सांस्कृतिक नैतिकता आदि परन्तु सर्वाधिक दबाव लैंगिक नैतिकता पर दिया गया है। यही नहीं, समाज में प्रत्येक से ये उम्मीद की जाती है वे इन्हें जानें, समझें और नैतिक नियम, की पालना, हेतु को स्वीकार व पालना करें।

→ उचित शब्दों का चुनाव करें

4 1/2

→ व्याकरण का ध्यान में रखते हुए अनुवाद करें।

लाईन टू लाईन अनुवाद करें।

अभ्यास करें।

निम्नांकित अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए।

6. अंक-10

Science and art are fundamentally two mediums of knowledge, but in the present world they have developed as two subjects of study and thus their relative importance has decreased. At the level of thinking, science and art complement each other and it seems that it is impossible to expand the influence of one without the other. But, at the practical level, some fundamental differences between the two subjects are also visible. Art is subjective whereas science is mainly dependent on interest. Science works on the basis of collection of facts, its integration and finally general conclusions. That is, it is necessary to have cause and effect. On the other hand, art is based on imagination, feelings and emotions. Therefore, it is definitely necessary to find the solution to the given question.

विज्ञान और कला मूलरूप से ज्ञान के दो माध्यम है, लेकिन वर्तमान विश्व मे अध्ययन के दो विषय मे विकसित हुए है जिससे उनकी पारस्परिक महत्व कम होता रहा। विचार के स्तर पर विज्ञान और कला एक दूसरे के पूरक है तथा एक के बिना दूसरे का प्रभाव प्रसारण करना असंभव है। परंतु प्रायोगिकी के स्तर पर दोनो विषयों मे कुछ मूलभूत अंतर दिखाई पड़ता है। कला व्यक्तिगत है जबकि विज्ञान मुख्य रूप से रूचि पर निर्भर है। विज्ञान तथ्यों का संग्रहण, उनका समायोजन और अंत मे निष्कर्ष के आधार पर काम करता है। अर्थात, कारण और प्रभाव का होना आवश्यक है। इसके विपरित, कला, कल्पना, भावनाओं, तथा मनोभाव पर आधारित है। अतः यह सम्पूर्ण रूप आवश्यक है कि दिए गए प्रश्नों का हल खोजा जाए।

5½

→ मात्रा संबंधी अशुद्धियो के बचे।
→ अच्छे शब्दो को सम्मिलित करे।

7. नगरीय विकास एवं स्वायत शासन विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा स्वायत्त शासन ... सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवायें तुरन्त प्रभाव से समाप्त किये जाने के बाबत कार्यालयी आदेश जारी किये जाने के लिए कार्यालयी आदेश का प्रारूप लिखिए। अंक-10

जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान सरकार

नगरीय विकास एवं स्वायत शासन विभाग

प. क्र/ एक/ नवि स्थाशाविं/ शासन/ काआ/ 2024/12 5 मई 2025

कार्यालयी आदेश।

→ राजस्थान राज्यपाल महोदय को भारतीय संविधान व राजस्थान सेवा नियमों के तहत प्राप्त अधिकारों का उपयोग करते हुए स्वायत शासन विभाग में कार्यरत समस्त सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवाएँ तुरंत प्रभाव से समाप्त की जाती है।

वित्त विभाग सभी प्रकार की देयता का पूर्ण रूप से जिम्मेदार होगा।

उक्त आदेश अग्रीम आदेश तक लागू रहेगा।

3/2

पैराग्राफ

→ पत्र को 2 या 3 पैराग्राफ में लिखें

→ Adress लिखे।

→ मात्रा संबंधी अशुद्धियां न करें।

भवदीय

अवस

हस्ताक्षर

अवस

शासन सचिव

नगरीय विकास व स्वायत शासन विभाग।

प.क्र/ एफ/ नविस्थावि/ शासन/ का/अ/ २०२४/१३-   5 मई २०२४

प्रतिलिपि- सूचनार्थ व आवश्यक कार्यवाही हेतु -

1. निजी सचीव, माननीय राज्यपाल महोदय, राजस्थान।
2. निजी सचीव, मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार।
3. निजी सचिव, स्वायत्त शासन मंत्री महोदय।
4. मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार।
5. समस्त विभागीय सचीव।
6. रक्षित पत्रावली

हस्ताक्षर
अ ब स

शासन सचिव
नगरीय विकास एवं स्वायत्त
शासन विभाग।

8. माननीय कलेक्टर महोदय, जिला-बाड़मेर की ओर से कलेक्टर कार्यालय में इलेक्ट्रोनिक सामग्री के आपूर्ति बाबत निविदा का प्रारूप तैयार कीजिए। अंक-10

राजस्थान सरकार

कार्यालय, जिला कलेक्टर बाड़मेर

प०क्र/निविदा/जिकबा/2024/1 5 मई 2024

निविदा संख्या 2024/1

→ राजस्थान सरकार में पंजीकृत सभी विक्रेताओं के लिए जिला कलेक्टर बाड़मेर द्वारा निविदा आमंत्रित जारी की जा रही है। निविदा प्रपत्र कलेक्ट्रेट कार्यालय के लेखा विभाग से दिनांक 6 मई प्रातः 10 बजे से 12 मई सायं 5 बजे तक प्राप्त की जा सकेगी। सभी पूर्ण वांछित सूचनाओं सहित निविदा आवेदन प्रपत्र दिनांक 13 मई दोपहर 3 बजे तक अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में जमा करवा सकते है। निविदा दिनांक 13 मई को सायं 5 बजे भवन परिसर में खोली जायेगी।

→ धरोहर राशि
अनुमानित लागत 2%

(5½)

क्रमांक	कार्य का विवरण	धरोहर राशि	अनुमानित लागत	निविदा शुल्क	कार्य पूर्ण होने का समय
1	ट्यूबलाइट बल्ब-1000	5000₹	100000	100₹	30 दिवस
2	पंखा-कूलर 200	10,000	500000	100-	30 दिवस
3	कुर्सी, 70	10,000	700000	100	30 दिवस
4	प्रोजेक्टर + वाटर कूलर	10,000	700000	100	30 दिवस

निविदा शर्तें -

1. किसी भी विवाद का कार्यालय, जिला न्यायपालिका बाड़मेर होगा।

2. निविदा को आंशिक रूप, या पूर्ण रूप से बदलाव व निरस्त करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरकर्ता का होगा।

3. गलत जानकारी देने पर निविदा धारक की अनुमति अमान्य की जावेगी।

4. कार्य पूर्ति में अकारण विलंब की स्थिति में धरोहर राशि जब्त की जायेगी।

5. भेजे गए सामान की गुणवत्ता की जाँच, गुणवत्ता अधिकारी, मुख्य लेखाधिकारी बाड़मेर करेंगे, तथा उनका निर्णय अंतिम होगा।

6. निविदा शर्तों में बदलाव का सम्पूर्ण अधिकार अधोहस्ताक्षरकर्ता का होगा।

→ धरोहर राशि नहीं लिखे।

→ सारणी की पुनरावृत्ति

बिना अशुद्धि के बताए

→ पत्र लेखन 2 या 3 पैराग्राफ में करें।

हस्ताक्षर

अभय

जिला कलेक्टर बाड़मेर

भाग–स

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए– अंक-20

1. ई-शासन भ्रष्टाचार का शत्रु है।
2. वैश्वीकरण बनाम संरक्षणवाद

ई-शासन भ्रष्टाचार का शत्रु है।

भ्रष्टाचार को परिभाषित करते हुए मूल भावना, अपने अधिकारों का अनुचित लाभ प्राप्त करने के लिए दुरुपयोग करना ही है। भ्रष्टाचार का चहुदिशाओं में बढता प्रसारण एक वैश्विक समस्या है।

भ्रष्टाचार के कारणों में नौकरशाही की अधिक संख्या होना, जिम्मेदारी केन्द्रों का विकेन्द्रीकरण होना, रोकड़ का अधिक प्रयोग, भारतीय जनता की असाक्षरता व अशिक्षा, सामंतवादी विचारधारा नौकरशाही का राजा-प्रजा जैसा संबंध होना, दैनिक निगरानी की कमी तथा न्यायपालिका का वाद निस्तारण में शिथिलता दिखाना आदि।

इन कारणों पर सक्षम रोक लगाने के कई उपाय किए गए, जिसमें ई-गवर्नेंस अथवा ई-शासन प्रमुख माना जाता है।

ई-शासन का आशय सरकार

संचालन, प्रशासन, वित्तीय व प्रशासनिक प्रबंधन में सूचना व प्रौद्योगिकी का उपयोग करना। इसमें कम्प्यूटर, मोबाइल एप्लीकेशन, सेटेलाइट ट्रेकिंग, सेवा केन्द्रों का प्रयोग किया जाता है।

ई-शासन का प्रभाव स्थापित होने के कारण - (1) जवाबदेहिता व पारदर्शिता को बढ़ावा, तकनीक की सहायता से त्वरित सूचना का आदान प्रदान व कार्यवाही निश्चित की जाती है। (2) डिजीटल सेवा आपूर्ति - सभी बैंक व वित्तीय आपूर्ति को जनआधार, जनधन खाता आदि के माध्यम से सीधे लाभार्थी तक पहुंच जिससे बिचौलियों की समाप्ति हुई। (3) दस्तावेजों का डिजीटलाइजेशन होने से सभी दस्तावेजों की शुद्धता व सटीकता बनी रहती है तथा कोई अवांछनीय बदलाव नहीं किया जा सकता। (4) केवल ई-शासन के माध्यम से कई प्रक्रिया ऑनलाइन हुई जैसे नामांकन, रजिस्ट्री, ऑनलाइन शिकायत सेवा जिससे मानव हस्तक्षेप में गिरावट आई (5) कार्यालयों में उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए

बायोमैट्रिक मशीन का लगाना, ② मरीजों का स्वास्थ्य रिकार्ड, ③ योजना के लाभार्थियों की सूची आनलाइन तैयार करना, ④ चुनाव में EVM का उपयोग जिससे बूथ कैपचरिंग जैसी घटनाओं पर शिकंजा कसा।

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर ई-शासन को भ्रष्टाचार का शत्रु माना गया है परन्तु भ्रष्टाचार एक तकनीकि समस्या न होकर एक मानसिक समस्या है। कर्मचारियों को इसके कुप्रभावों के प्रति सजग करना तथा जनता में जागरूकता का प्रसार करने से ही इस पर लगाम लगाई जा सकती। व्यवहारिक परिवर्तन ही वास्तविक रूप में भ्रष्टाचार को जड़ से समाप्त कर सकता है।

परिभाषा - प्रशासन भ्रष्टाचार, ई-शासन

कुप्रभाव, प्रभाव — रोकने में उपयोगिता

प्रसार — जवाबदेहिता, दस्तावेज update
- leakage, चयनित वितरण
की सिद्धि।

किंवदंती ~~जनश्रुति~~